थाट अथवा **ठाट** हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में रागों के विभाजन की पद्धति है। सप्तक के १२ स्वरों में से ७ क्रमानुसार मुख्य स्वरों के उस समुदाय को **ठाट** या **थाट** कहते हैं जिससे राग की उत्पत्ति होती है।[1] थाट को मेल भी कहा जाता है। इसका प्रचलन पं॰ भातखंडे जी ने प्रारम्भ किया। हिन्दी में 'ठाट' और मराठी में इसे 'थाट' कहते हैं। उन्होंने दस थाटों के अन्तर्गत प्रचलित सभी रागों को सम्मिलित किया। वर्तमान समय में राग वर्गीकरण की यही पद्धति प्रचलित है।

थाट के कुछ लक्षण माने गये हैं-

- किसी भी थाट में कम से कम सात स्वरों का प्रयोग ज़रूरी है।
- थाट में स्वर स्वाभाविक क्रम में रहने चाहिये। अर्थात सा के बाद रे, रे के बाद ग आदि।
- थाट को गाया बजाया नहीं जाता। इससे किसी राग की रचना की जाती है जिसे गाया बजाया जाता है।
- एक थाट से कई रागों की उत्पत्ति हो सकती है। आज भारतीय संगीत पद्धति में १० ही थाट माने जाते हैं। 9876543245 Punjabi Ka no. Ha

^ दस ठाट

पं. भातखंडे के द्वारा वर्गीकृत दस थाटों के नाम इस प्रकार

Scanned with CamScanner

हैं-

- 1. कल्याण ठाट
- 2. बिलावल ठाट
- 3. खमाज ठाट
- 4. काफी ठाट
- 5. पूर्वी ठाट
- 6. मारवा ठाट
- 7. भैरव ठाट
- 8. भैरवी ठाट
- 9. आसावरी ठाट
- 10. तोड़ी ठाट।

थाट-राग पद्धति में स्वर-साम्य का बहुत अधिक ध्यान रखा गया है। इस पद्धति के अनुसार एक थाट के अन्तर्गत उन्हीं रागों को रखा गया है जिन के स्वरों में अधिक समानता है। उदाहरणार्थ--कल्याण थाट में मध्यम तीव्र लगता है, इसिलये इस थाट से जितने भी राग उत्पन्न हों उन सभी में मध्यम तीव्र अवश्य लगेगा। इसी प्रकार काफी थाट में गंधार और निषाद स्वर कोमल लगते हैं, इसलिये इस थाट ने जितने भी राग उत्पन्न होंगे उन सभी में गंधार और निषाद कोमल अवश्य लगेंगे।

^ विभिन्न थाटों के स्वर

Scanned with CamScanner

(नोट: कोमल स्वरों के नीचे एक रेखा दिखायी जाती है, जैसे ग़। तीव्र म के ऊपर एक रेखा दिखायी जाती है जैसे- म॑)

- **बिलावल थाट**- सा, रे, ग, म, प, ध, नि
- **कल्याण**- सा, रे, ग, मं, प ध, नि
- **खमाज**- सा, रे ग, म, प ध, नि़
- **आसावरी**- सा, रे, ग़, म, प ध़, नि़
- **काफ़ी**- सा, रे, ग़, म, प, ध, नि़
- **भैरवी**- सा, रे़, ग़, म, प ध़, नि़
- **भैरव**- सा, रे़, ग, म, प, ध़ नि
- **मारवा**- सा, रे़, ग, मं, प, ध नि
- **पूर्वी**- सा, रे़, ग, मं, प ध़, नि
- **तोड़ी**- सा, रे़, ग़, मं, प, ध़, नि

^ हिन्दी प्रारूप

थाट	सा	रे़	रे	ग़	ग	म	मं	प	ध़	ध	नि़	नि	
बिलावल थाट	सा		रे		ग	म		प		ध		नि	सारे शुद्ध स्वर
कल्याण	सा		रे		ग		मं	प		ध		नि	केवल् मं (तीव्र)
खमाज	सा		रे		ग	म		प		ध	नि़		केवल् नि कोमल
भैरव	सा	रे़			ग	म		प	ध़			नि	रे और ध कोमल
मारवा	सा	रे़			ग		मं	प		ध		नि	रे कोमल म तीव्र
काफ़ी	सा		रे	ग़		म		प		ध	नि़		ग और नि कोमल
पूर्वी	सा	रे़			ग		मं	प	ध़			नि	रे और ध कोमल , म तीव्र
आसावरी	सा		रे	ग़		म		प	ध़		नि़		ग , नि और ध कोमल
भैरवी	सा	रे़		ग़		म		प	ध़		नि़		रे, ग, ध, और नि कोमल
तोड़ी	सा	रे़		ग़			मं	प	ध़			नि	रे, ग, ध कोमल और म तीव्र
TWO OR LESS SWAR VIKRAT					MORE THAN TWO SWAR VIKRAT								

Scanned with CamScanner